# पंचम अध्याय

LIBRARY

# अध्याय–पंचम

# शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

## 5.1 परिचय

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में सब से महत्वपूर्ण स्थान है शिक्षक का। विद्यालय की उन्नति के लिए उचित पाठ्यक्रम, श्रेष्ठ पाठ्य पुस्तकें, उत्तम शिक्षा साधन तथा उपयुक्त विद्यालयगृहों की आवश्यकता तो है ही, परन्तु उस से कहीं ज्यादा आवश्यकता है उपयुक्त शिक्षक–शिक्षिकाओं की। वे ही शिक्षा पद्धति को चलाते हैं। वे ही पुस्तकों तथा दृश्य–श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं। देश के भावी नागरिकों क निर्माण भी वे ही करते हैं। अच्छे शिक्षकों के अभाव में किसी भी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति निर्जीव और निस्तेज हो जाती है। इसी लिये तो प्राचीन भारत में शिक्षकों का एक विशिष्ट स्थान था। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा नियुक्त राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग तथा कोठारी आयोग आदि ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षकों की आर्थिक, सामाजिक और व्यावसायिक दशाओं को सुधारे बिना शिक्षा क उत्तरदायित्व अपूर्ण ही रहेगा। शासकीय स्तर पर चाहे कितना ही मनोहर योजना बन ली जाये किन्तु शिक्षक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करे तो वह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती। देश के सारे शिक्षा शस्त्री, विद्वान, राजनीतिज्ञ और प्रशासक यह स्वीकार करते हैं कि देश जिस संकटकालीन दौर से गुजर रहा है उसमें शिक्षक ही उसे सम्बल प्रदान कर सकते हैं। उसे इस स्थिति से उबारने में सहायक हो सकते हैं। इन सारी मान्यताओं के पश्चात् भी शिक्षक की स्थिति में सरकार द्वारा कोई परिवर्तन नहीं किया जा रहा, उसकी गाड़ी जहां थी वहीं खड़ी है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

## 5.2 प्रस्तुत अध्ययन :

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि गुजरात राज्य के दाहोद जिला में से तीन तहसील की प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक अकादमिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक समस्याएँ कितने स्तर तक हैं।

## 5.3 समस्या कथन :

''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन''

## 5.4 संक्षेपिका :

संपूर्ण लघु शोध प्रबन्ध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध संबंधित अध्ययन, तृतीय अध्याय में शोध समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा अध्याय में शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में संदर्भग्रंथ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरणों को लिया गया है। अध्यायवार संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार हैं।

**5.4.1** प्रथम अध्याय में शिक्षक की भूमिका, विभिन्न शिक्षा आयोग ने शिक्षकों की स्थिति सुधारने के बारे में शिक्षकों की वर्तमान अवस्था, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्यायें, शोध के चर, उद्देश्य, शून्य परिकल्पाएं एवं परिसीमाएं।

**शोध के उद्देश्य :**

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में लिंग के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में विद्यालय के प्रकार के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में स्थान के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में अनुभव के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।

6. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में व्यावसायिक योग्यता के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पनाएं :-**

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में विद्यालय के प्रकार के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में स्थान के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में अनुभव के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में व्यावसायिक योगयता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**चर :**

विश्लेषण की सुविधानुसार चरों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

**स्वतंत्र चर :**

1. लिंग
2. विद्यालय के प्रकार
3. स्थान
4. अनुभव
5. व्यावसायिक योग्यता
6. शैक्षणिक योग्यता

Regional Institute of Education (LIBRARY) Bhopal

**आश्रित चर :**

1. भौतिक समस्याएँ
2. अकादमिक समस्याएँ
3. प्रशासनिक समस्याएँ
4. आर्थिक समस्याएँ

**5.4.2** द्वितीय अध्याय में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याओं, माध्यमिव शिक्षकों की विद्यालयों संबंधी समस्याओं आदि प्रकार के शोध समस्या से संबंधित पूर्व में देश में किये गये अध्ययनों की जानकारी दी गई है।

**5.4.3** तृतीय अध्याय में शोध के लिये न्यादर्श, शोध के लिये विद्यालयों, शोध उपकरण प्रदत्तों का सारणीयन, प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयों, प्रयुक्त सांख्यिकी विधियों आदि की जानकारी दी गई है।

**न्यादर्श :**

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात राज्य के दाहोद जिला में से फतेपुरा, झालोद एव देवगढ़ बारीया इन तीन तहसील से ग्रामीण एवं शहरी और शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 180 कार्यरत शिक्षकों को प्राथमिक विद्यालयों में से यादृच्छिक विधि द्वार न्यादर्श के लिए चयनित किया गया है। जिस में 106 शिक्षकों एवं 74 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया।

**उपकरण :**

संबंधित अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्यात्मक प्रश्नावली का स्वयं निर्माण किया गया तथा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों से प्रश्नावली भरवाई गई।

**प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी :**

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 'मध्यमान' 'मानक विचलन' 'टी' अनुपात व 'प्रसरण

**5.4.4** चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। चतुर्थ अध्याय में शोध उद्‌देश्य के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण को तालिका क्रमांक 5.1 में दर्शाया गया है।

**तालिका क्रमांक 5.1 : प्रदत्तों का विश्लेषण**

| परिकल्पना क्रमांक | तालिका क्रमांक | प्रयुक्त सांख्यिकी | प्राप्त परिणाम | प्राप्त निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 4.2 | 'टी' अनुपात | 0.033 | निरर्थक NS |
| 2. | 4.3 | 'टी' अनुपात | 1.868 | निरर्थक NS |
| 3. | 4.4 | 'टी' अनुपात | 2.135 | सार्थक S* |
| 4. | 4.5 | प्रसरण विश्लेषण | 1.125 | निरर्थक NS |
| 5. | 4.6 | प्रसरण विश्लेषण | 0.276 | निरर्थक NS |
| 6. | 4.7 | प्रसरण विश्लेषण | 4.248 | सार्थक S* |

0.05 स्तर पर सार्थकता नहीं है।

*0.05 स्तर पर सार्थकता है।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

## 5.5 निष्कर्ष एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी का उपयोग करते हुये न्यादर्श के प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

- प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में लिंग के आधार पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- कार्यरत शिक्षकों की विभिन्न समस्याएँ—भौतिक, अकादमिक एवं आर्थिक को छोड़कर प्रशासनिक समस्याओं में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों में प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं में स्थान के आधार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- कार्यरत शिक्षकों की विभिन्न समस्याएँ में भौतिक, अकादमिक को छोड़कर प्रशासनिक एवं आर्थिक समस्याओं में शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों सार्थक प्रभाव दिखाई पड़ता है।

- कार्य अधिक नहीं होना चाहिए जो अध्यापन के नहीं हैं।
- व्यावसायिक विकास के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए जैसे कि पुस्तकें खरीदने के लिए अनुदान, शोध के लिए अनुदान, विचार गोष्ठियों के अनुदान आदि।
- योग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर सम्मान देने के लिये पुरस्कार देकर सम्मान करना चाहिए।
- शिक्षकों का प्रशिक्षण सन्तोषकारक दिया जाना चाहिए कि वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग कर सकें।

## 5.7 भावी शोध हेतु समस्यायें :-

- भविष्य के शोध हेतु प्रस्तावित समस्यायें इस दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन के किया जा सकता है।
- शहरी और ग्रामीण शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।
- ग्रामीण स्तर के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की आर्थिक एवं भौतिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- आदिवासी विस्तार की प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- माध्यमिक स्तर की शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal